राज कॉमिक्स

मूल्य 8.00 संख्या 653

मर गया अश्वराज

© Raja Pocket Books

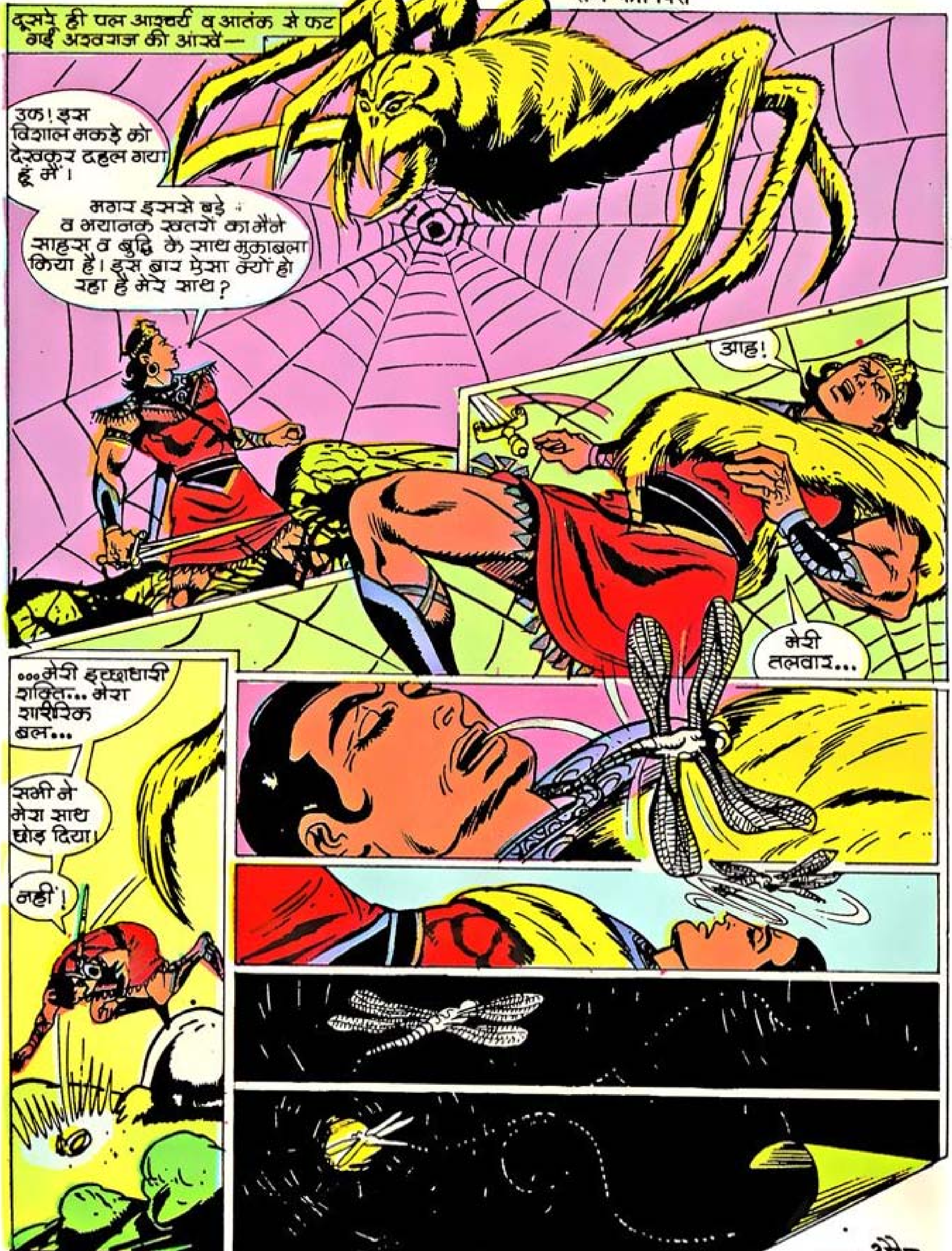
दूसरे ही पल आश्चर्य व आतंक से फट गईं अश्वराज की आंखें—
उफ! इस विशाल मकड़े को देखकर दहल गया हूं मैं।
मगर इससे बड़े व भयानक खतरों का मैंने साहस व बुद्धि के साथ मुकाबला किया है। इस बार ऐसा क्यों हो रहा है मेरे साथ?
आह!
मेरी तलवार...
...मेरी इच्छाधारी शक्ति... मेरा शारीरिक बल...
सभी ने मेरा साथ छोड़ दिया।
नहीं!

...और

मर गया अश्वराज
...मेरी आत्मा उस पतंगे के रूप में मेरे शरीर से निकल गई मित्रो।
नहीं! अश्वराज! ऐसा मत कहो।
!!
अश्वराज, अश्ववद् और रक्ताम्बर को बता रहा था अपने स्वप्न के विषय में।
यह स्वप्न भयानक अवश्य था, किंतु स्वप्न कभी सत्य नहीं होते।
फिर अभी तो हमें भाभीश्री व कारूं के खजाने की भी खोज करनी है।
सब कुछ भूलकर हमें उनकी खोज में बढ़ना चाहिए।
हां। लेकिन उससे पहले मैं रक्ताम्बर के भी मिल जाने की सूचना *श्रव्यशक्ति को प्रेषित कर दूं...
...ताकि वो यह सूचना कालाखोर और नीलकंठ को देकर उन्हें भी साथ लेता हुआ मुझ तक पहुंच सके।...
...और हम फिर एक साथ एक-रथ का निर्माण कर सकें।...
* श्रव्यशक्ति मीलों दूर तक की ध्वनि सुन सकता है।

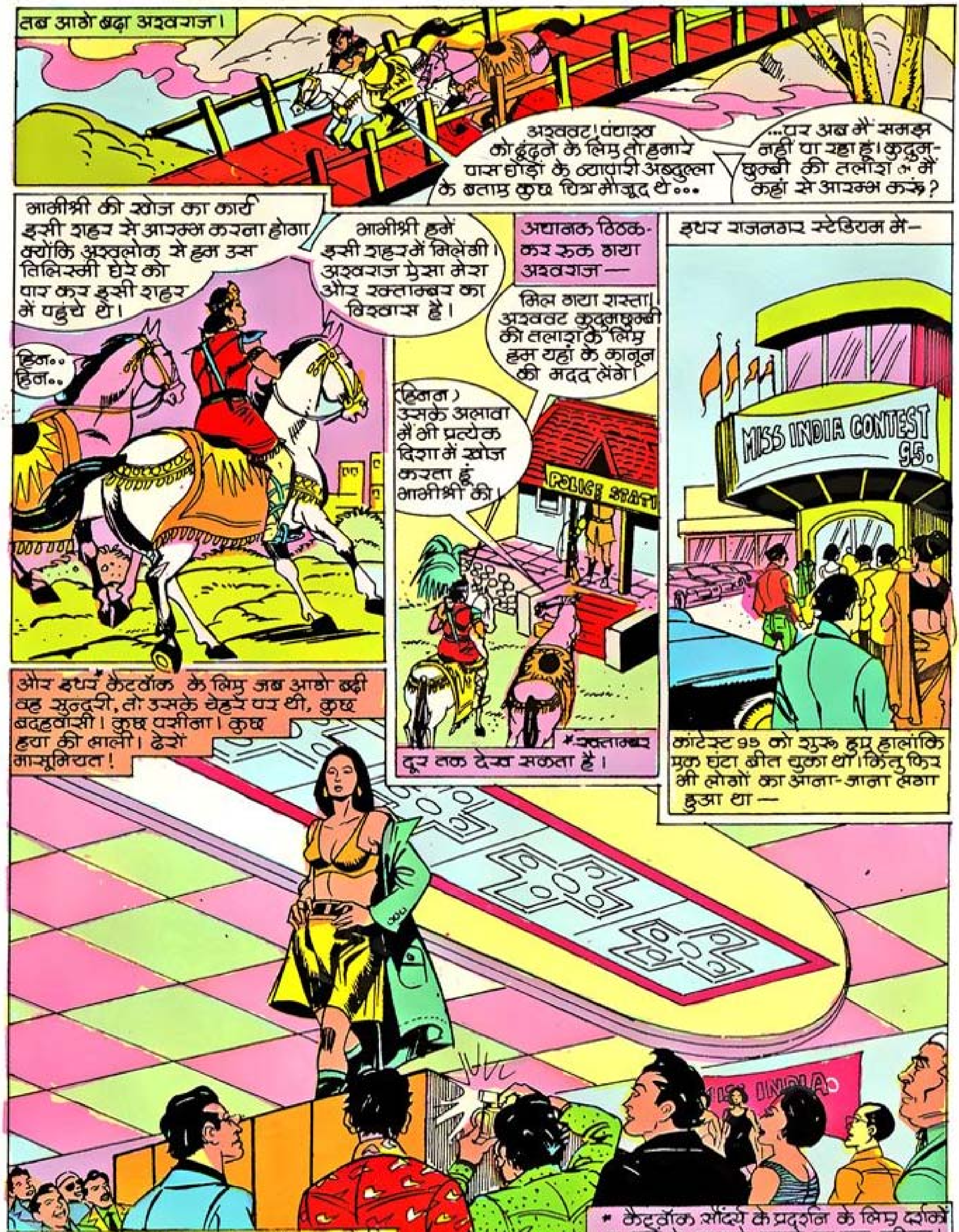
तब आगे बढ़ा अश्वराज।
अश्ववट! पंचाश्व को ढूंढने के लिए तो हमारे पास घोड़ों के व्यापारी अब्दुल्ला के बताए कुछ चिन्ह मौजूद थे...
...पर अब मैं समझ नहीं पा रहा हूं। कुदुमकुम्बी की तलाश मैं कहां से आरम्भ करूं?
आभीश्री की खोज का कार्य इसी शहर से आरम्भ करना होगा क्योंकि अश्वलोक से हम उस तिलिस्मी घेरे को पार कर इसी शहर में पहुंचे थे।
आभीश्री हमें इसी शहर में मिलेगी। अश्वराज ऐसा मेरा और रक्ताम्बर का विश्वास है।
हिन.. हिन..
अचानक ठिठक कर रुक गया अश्वराज—
मिल गया रास्ता! अश्ववट कुदुमकुम्बी की तलाश के लिए हम यहां के कानून की मदद लेंगे।
(हिनन) उसके अलावा मैं भी प्रत्येक दिशा में खोज करता हूं आभीश्री की।
POLICE STATI
* रक्ताम्बर दूर तक देख सकता है।
इधर राजनगर स्टेडियम में—
MISS INDIA CONTEST 95.
कांटेस्ट 95 को शुरू हुए हालांकि एक घंटा बीत चुका था। किंतु फिर भी लोगों का आना-जाना लगा हुआ था—
और इधर कैटवॉक के लिए जब आगे बढ़ी वह सुन्दरी, तो उसके चेहरे पर थी, कुछ बदहवासी। कुछ पसीना। कुछ हया की लाली। ढेरों मासूमियत!
MISS INDIA
जिसे देखकर ठगा सा रह गया था हर कोई—
* कैटवॉक सौंदर्य के प्रदर्शन के लिए दर्शकों व जजों के सामने चलने का एक तरीका।

और फिर इतनी तालियां बजीं, इतनी देर तक बजीं कि शायद निर्णय हो गया था मिस इण्डिया-95 का।
मॉर्वलस!
अद्भुत!
वाह! ये तो रूप की रानी है।...और मैं चोरों का राजा भी इस बात को स्वीकार करता हूं।
सचमुच! ऐसा सौन्दर्य मैंने पहली बार देखा है।
मिस इण्डिया नू छड्डोजी! ऐते मिस यूनिवर्स-95 का ताज भी जीतेगी।

दस मिनट तक बजती रही तालियों की भारी गड़गड़ाहट व शोर सुनकर उस चेहरे की चमक जबरदस्त रूप से बढ़ गई थी—
मेरी मेहनत सफल हो गई। ये लड़की तो मेरे लिए बम्पर इनाम साबित होगी।

दूरदर्शन पर मिस इण्डिया कांटेस्ट-95 का सीधा प्रसारण जारी था।
वाह! ये तो करामाती लड़की है।
पता नहीं ये शादी कब करेगी।
OPT

सर्वप्रथम चौंका रक्ताम्बर!
अश्ववट! रक्ताम्बर क्या कह रहा है?
अश्वराज! रक्ताम्बर भामीश्री को देख चुका है।
प्रसन्नता के उन्माद से भर उठा अश्वराज—
कुदुम.. ये तो कुदुम है। मेरी कुदुमकुम्बी।
इसका कुसूर नहीं है ये लड़की किसी को भी दीवाना कर सकती है।
प्रसन्नता के आवेश में अश्ववट वहां मौजूद भीड़ को भी भूल गया था—
किंतु अश्वराज! भामीश्री यह किस प्रकार की कैद में है?
यह आधुनिक युग है अश्ववट! किंतु कुदुम को इस कैद से स्वतंत्र कराना जरूरी है।
??
फिर—
तुम्हें भूल हुई है वह टेलीविजन है जो कि सजीव चित्रों को हूबहू प्रसारित करता है।
तुम्हारी पत्नी टेलीविजन में कैद नहीं है, बल्कि मिस इण्डिया कांटेस्ट में भाग ले रही है।
तब राजनगर की ओर उड़ चला अश्ववट पर सवार अश्वराज।
चल! जल्दी कर अश्ववट!
हिनननऽऽ मैं अब भामीश्री को साफ-साफ देख रहा हूं! हिननऽऽ

मिस इण्डिया कांटेस्ट-95 के सिर पर रखा जा रहा था ताज और कुदमचुम्बी के सिर पर ताज पहना रही थी मिस इण्डिया कांटेस्ट-94 की विजेता मिस ऐश्वर्य राय!
सचमुच! तुम्हें देखकर चाँद भी शरमा जाए पारुल।
मेरा सौन्दर्य प्रदर्शन की वस्तु नहीं। यह सिर्फ अश्वराज की अमानत है। मगर इस समय यह सब करने के लिए मैं विवश हूं।
इधर ऑडिटोरियम के उस हिस्से में अचानक जबरदस्त अफरातफरी मची—
ओह! यह क्या?
आऽऽह
ये... ये ऑडिटोरियम में कैसे घुस गया?
मंच पर मौजूद आयोजकों ने रोकने की पूरी कोशिश की थी उसे, लेकिन—
रोको इसे। आऊऽऽ
ये मिस इण्डिया की ओर बढ़ रहा है। ईऽऽ आह!
मिस इण्डिया को सुरक्षा घेरे में लो।

मगर कैसा घेरा? कैसी सुरक्षा?
धाड़
धाड़
स्प्रिंग की भांति पुनः जो उछला वह जिस्म...
... तो मिस इण्डिया-95 के निकट ही पहुंचकर गिरा—
मिस इण्डिया कुदुमछुम्बी! हा हा हा!
कौन है ये शैतान? उफ। आह!
पल भर में बेहोश होकर उस विचित्र कंगारू की बांहों में लुढ़क गई थी कुदुम।
रोको इसे! वरना मैं बर्बाद हो जाऊंगा।
लेकिन कई मीटर ऊंची व लम्बी इस छलांग का मुकाबला कोई कैसे करता—
ओह गॉड!
ये तो पूरा शैतान है!

भगदड़ के बाद मुख्य द्वार की ओर बढ़ती पुलिस फायर तक न कर सकी—
लेकिन सर! वो कंगारू?
नहीं। गोली मिस-इण्डिया को लग सकती है!
कई लम्बी व ऊंची छलांगों के बाद ऑडिटोरियम से दूर होता चला गया वह विचित्र कंगारू—
वायरलैस पर संदेश प्रसारित करो और जीप को उसी दिशा में ले चलो जिस ओर वह कंगारू गया है।
कंगारू नाम मिल गया था उस विचित्र प्राणी को—
हा हा हा हा। आखिर मैं सफल हुआ अपने अभियान के प्रथम चरण में।
लेकिन शायद उसे नहीं पता था कि जानवरों की उछलकूद के लिए जंगल ही ज्यादा सुरक्षित है।
बिजली की नंगी तारों से छूने पर करण्ट का भयानक झटका लग सकता है।
इन कुछ क्षणों में कुदुमछुम्बी का सिर टकराने जा रहा था ठोस जमीन से—
और जिसका परिणाम भयंकर ही होना था।

लेकिन मिस इण्डिया-95 की खुशकिस्मती थी कि वे दो चुस्त चौकस निगाहें उस हैरतअंगेज दृश्य को देख चुकी थीं —
और बाज सी चमकीली ये आंखें थीं उस जांबाज प्रहरी की... जो राजनगर के काले आकाश पर ध्रुव तारे के समान चमकता हुआ शहर से अपराध व अपराधियों के काले सायों को दूर कर शांति व मानवता का संदेश देता हुआ झिलमिला रहा था —
मेरे यहां पहुंचने में हुई एक पल की भी देरी इसकी जान को खतरे में डाल देती।
और इसके मस्तक पर झिलमिलाता ये ताज इसका मिस इण्डिया-95 होना साबित कर रहा है।
यानी ये हंगामा निकट ही सिरीफोर्ट ऑडिटोरियम से शुरू हुआ है जहां कि आज मिस इण्डिया कांटेस्ट-95 का आयोजन था।
और इस हंगामे का मुख्य विलेन अपनी अज्ञानता का परिणाम यहां पड़ा भुगत रहा है।
...क्योंकि जिस ढंग से उछलकर ये बिजली की हाईटैंशन तारों से टकरा गया है उससे यह बात निश्चित रूप से साबित हो जाती है कि इसे बिजली और उसकी शक्ति का ज्ञान नहीं है।
मगर ये विचित्र प्राणी है कौन? क्या किसी सिर-फिरे वैज्ञानिक का कोई चमत्कार?

चमत्कारी तो मैं भी अपने युग में था। लेकिन तुम्हारे युग में आने के बाद मैंने जो-जो दृश्य देखे वह मेरे लिए भी किसी चमत्कार से कम नहीं।
ओफ़फ!
जैसे अभी मैं आकाश में जाती लोहे की उस रस्सी से झटका खा कर गिर गया।
लेकिन तुम्हारे युग के चमत्कार मुझे परास्त नहीं कर सकते।
मैं यहां कुदुमछुम्बी को लेने आया हूं।
और लेकर ही जाऊंगा।
इसकी बातों से क्या जाहिर हो रहा है? क्या ये अपने युग से हमारे युग में आया है? मगर ये कौन से युग की बात कर रहा है और कुदुमछुम्बी को क्यों ले जाना चाहता है?
कुदुमछुम्बी? बड़ी अजीबो-गरीब नाम है।
मगर फिलहाल तो मुझे न सिर्फ इसके हमलों से ही बचना है...
... बल्कि यह भी जानना है कि यह कौन है! अपने युग से इस युग में कैसे पहुंचा? और कुदुमछुम्बी के अपहरण के पीछे इसका क्या उद्देश्य है?
ओह! मैं तो इस लड़के को बच्चा ही समझ रहा था।
छपाक

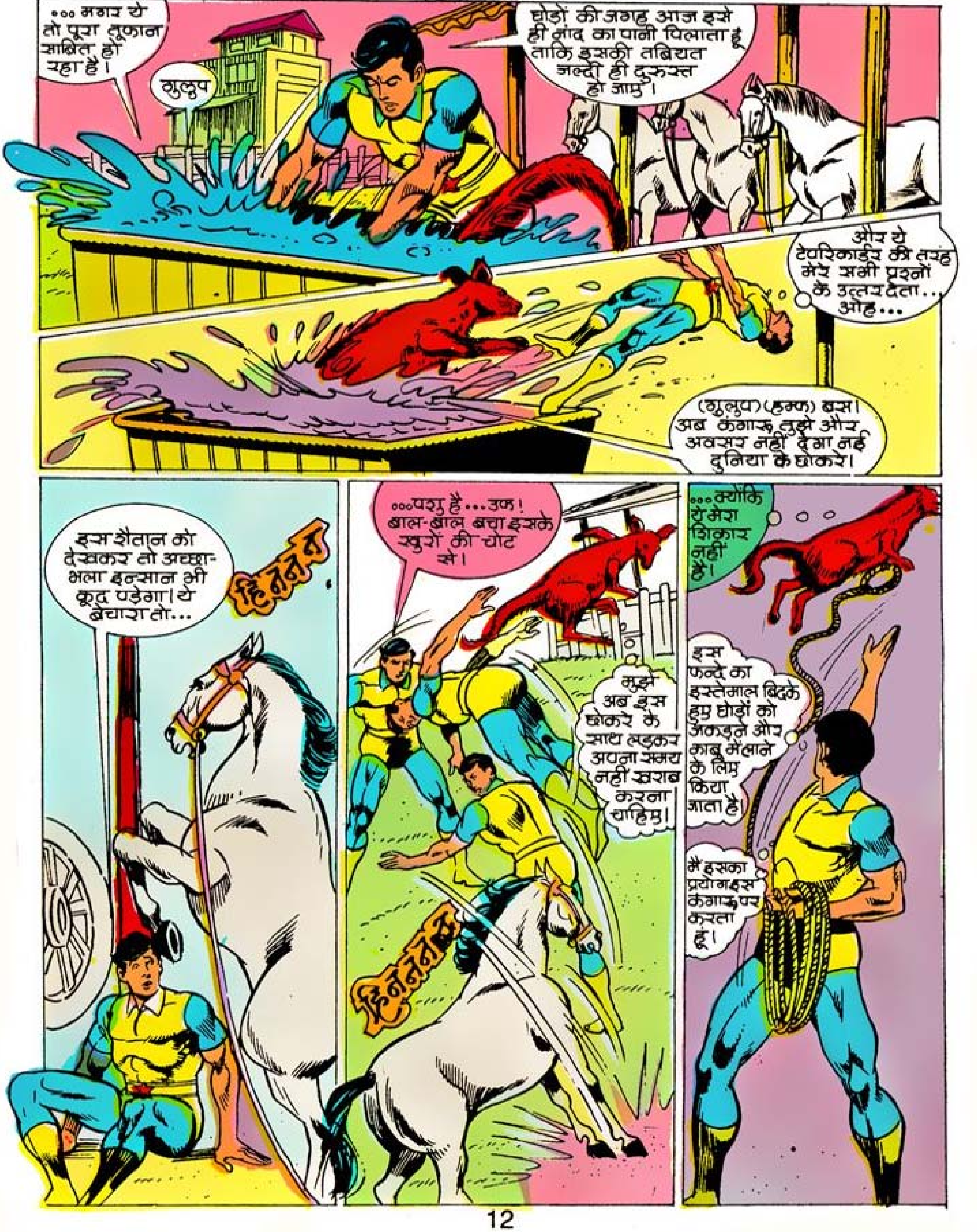
...मगर ये तो पूरा तूफान साबित हो रहा है।
गुलुप
घोड़ों की जगह आज इसे ही नांद का पानी पिलाता हूं ताकि इसकी तबियत जल्दी ही दुरुस्त हो जाए।
और ये टेपरिकार्डर की तरह मेरे सभी प्रश्नों के उत्तर देता... ओह...
(गुलुप) (हम्फ) बस। अब कंगारू तुझे और अवसर नहीं देगा नई दुनिया के छोकरे।
इस शैतान को देखकर तो अच्छा-भला इन्सान भी कूद पड़ेगा। ये बेचारा तो...
हिनननन
...पशु है... उफ! बाल-बाल बचा इसके खुरों की चोट से।
हिनननन
मुझे अब इस छोकरे के साथ लड़कर अपना समय नहीं खराब करना चाहिए।
...क्योंकि ये मेरा शिकार नहीं है।
इस फन्दे का इस्तेमाल बिदके हुए घोड़ों को जकड़ने और काबू में लाने के लिए किया जाता है।
मैं इसका प्रयोग इस कंगारू पर करता हूं।

उफ! लगता है इस छोकरे को शिकस्त दिए बिना मेरा यहां से बचकर निकल पाना मुश्किल है।
छनाक
घोड़े की ये नाल सही निशाने पर आकर बैठे तो इसके बाकी के कसबल भी निकल जाएंगे।
आह, मेरी आंख!
आहऽऽ
तेरा नसीब बहुत खराब है कंगारू जो तू अनजाने में सुपर कमांडो ध्रुव के सामने न सिर्फ पड़ गया, बल्कि उससे टकरा भी गया।
इसकी आंख से रक्त क्यों नहीं निकला?

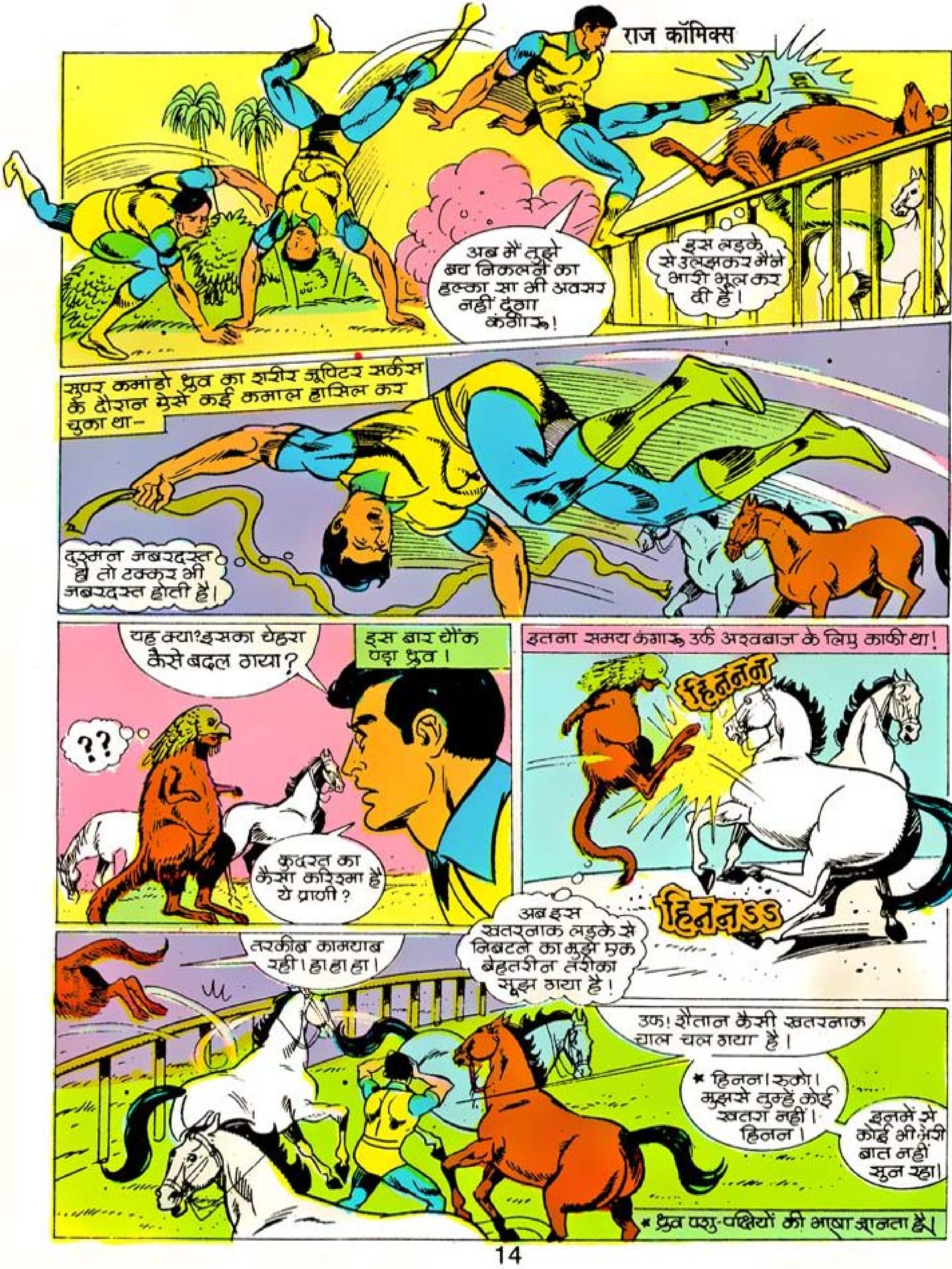
अब मैं तुझे बच निकलने का हल्का सा भी अवसर नहीं दूंगा कंगारू!
इस लड़के से उलझकर मैंने भारी भूल कर दी है।
सुपर कमांडो ध्रुव का शरीर जूपिटर सर्कस के दौरान ऐसे कई कमाल हासिल कर चुका था–
दुश्मन जबरदस्त हो तो टक्कर भी जबरदस्त होती है।
यह क्या? इसका चेहरा कैसे बदल गया?
इस बार चौंक पड़ा ध्रुव।
??
कुदरत का कैसा करिश्मा है ये प्राणी?
इतना समय कंगारू उर्फ अश्वबाज के लिए काफी था!
हिनननन
हिननन ऽऽ
अब इस खतरनाक लड़के से निबटने का मुझे एक बेहतरीन तरीका सूझ गया है!
तरकीब कामयाब रही! हा हा हा!
उफ! शैतान कैसी खतरनाक चाल चल गया है।
* हिनन! रुको! मुझसे तुम्हें कोई खतरा नहीं! हिनन!
इनमें से कोई भी मेरी बात नहीं सुन रहा!
* ध्रुव पशु-पक्षियों की भाषा जानता है!

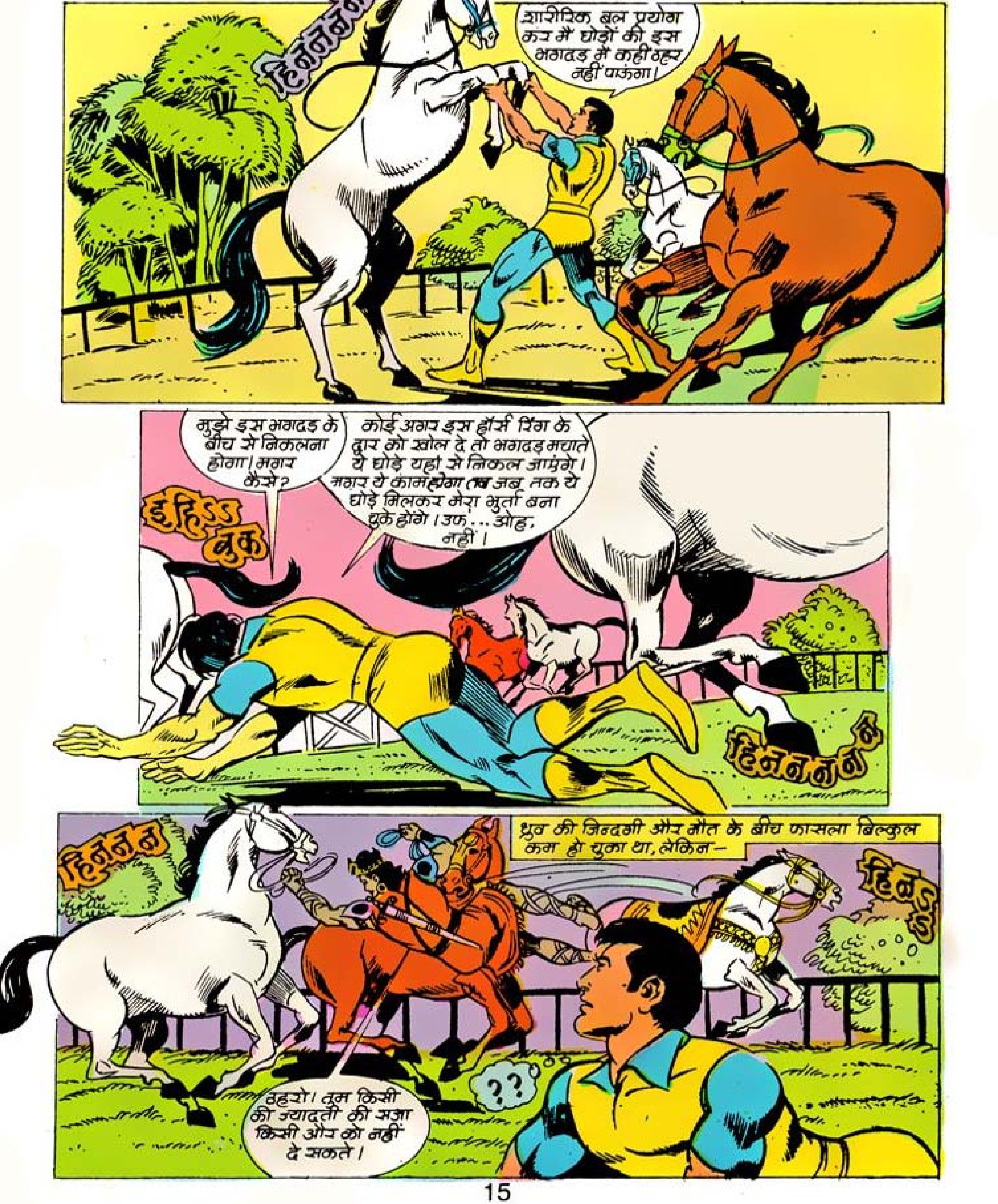
हिननननऽऽ
शारीरिक बल प्रयोग कर मैं घोड़ों की इस भगदड़ में कहीं ठहर नहीं पाऊंगा।
इहिऽऽ
बुक
मुझे इस भगदड़ के बीच से निकलना होगा। मगर कैसे?
कोई अगर इस हॉर्स रिंग के द्वार को खोल दे तो भगदड़ मचाते ये घोड़े यहां से निकल जाएंगे। मगर ये काम होगा जब तक ये घोड़े मिलकर मेरा भुर्ता बना चुके होंगे। उफ... ओह, नहीं।
हिननननन
हिननन
ध्रुव की जिन्दगी और मौत के बीच फासला बिल्कुल कम हो चुका था, लेकिन–
हिंबऽऽ
??
ठहरो। तुम किसी की ज्यादती की सजा किसी और को नहीं दे सकते।

जल्दी करो। रक्ताम्बर की पीठ पर सवार हो जाओ।
ओह! माइ गॉड। बोलने वाला घोड़ा।
रक्त जैसे रंग वाला यही घोड़ा रक्ताम्बर है।
घोड़े हॉर्स रिंग से बाहर निकलते चले गए —
उफ! इतना बलशाली और अजीबोगरीब पोशाकें पहने यह युवक कौन है?
मैंने घोड़ों की भीड़ को कम करने के लिए रास्ता खोल दिया था।
मगर यह समय इससे इसका परिचय पाने का नहीं है।
वह शैतान यहां से जरूर कुदुमछुम्बी को ही ले जाने की कोशिश करेगा
हिन हिन
अश्वराज! रक्ताम्बर कह रहा है कि शैतान अश्वबाज मूर्छित पड़ी भाभीश्री की ओर बढ़ रहा है।
नहीं। शैतान अश्वबाज को अब मैं उसके गुनाहों की सजा जरूर दूंगा।
इधर शैतान अश्वबाज बड़ी तेजी के साथ बढ़ रहा था कुदुमछुम्बी की ओर —
उफ! रक्ताम्बर यहां खड़े-खड़े उस स्थान का दृश्य कैसे देख रहा है जो हमें दिखाई नहीं पड़ रहा।
आह..

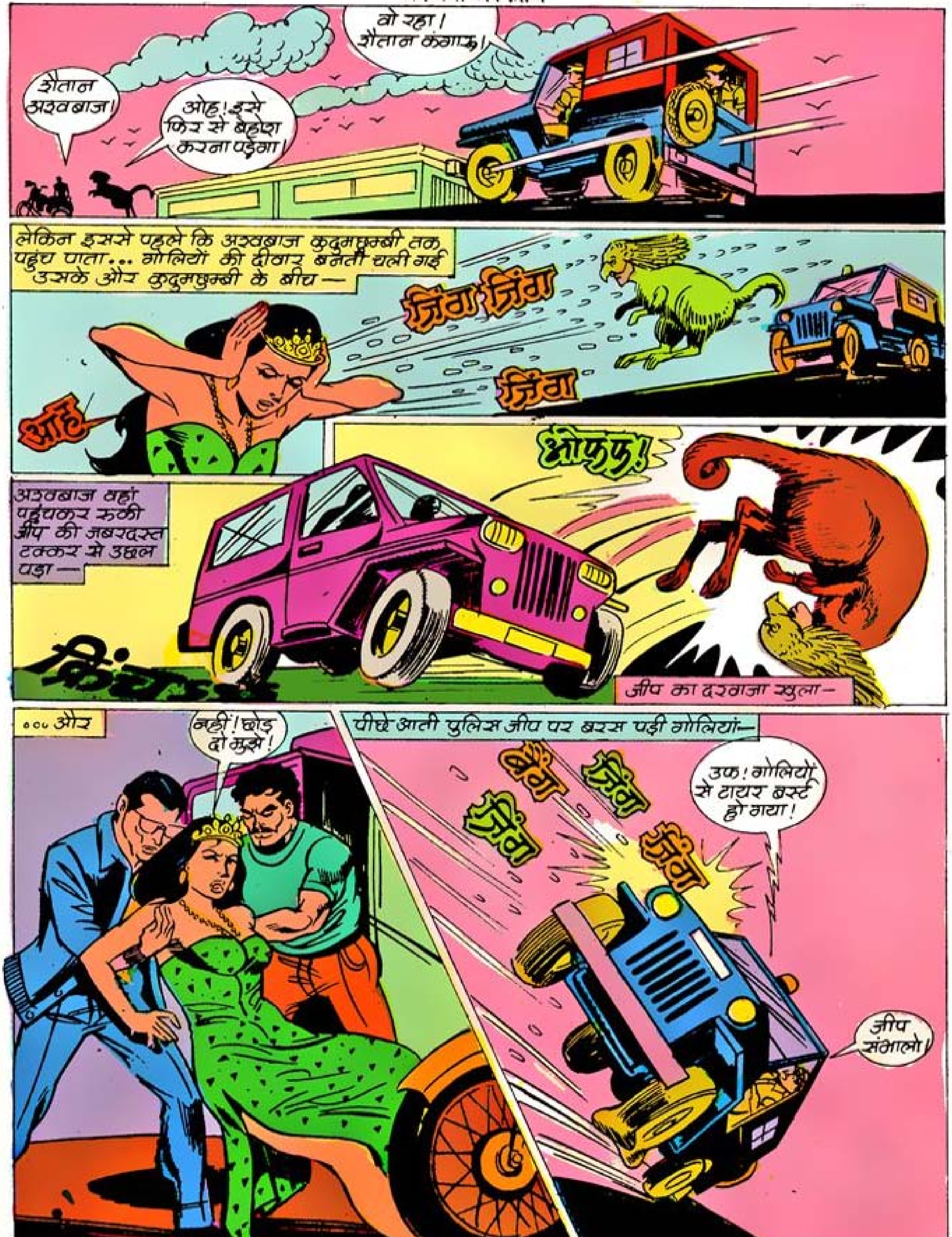
वो रहा! शैतान कंगारू!
शैतान अश्वबाज!
ओह! इसे फिर से बेहोश करना पड़ेगा!
लेकिन इससे पहले कि अश्वबाज कुदमछुम्बी तक पहुंच पाता... गोलियों की दीवार बनती चली गई उसके और कुदमछुम्बी के बीच—
ज़िंग ज़िंग
ज़िंग
आह
धोफ्फ!
अश्वबाज वहां पहुंचकर रुकी जीप की जबरदस्त टक्कर से उछल पड़ा—
किर्र
जीप का दरवाजा खुला—
...और
नहीं! छोड़ दो मुझे!
पीछे आती पुलिस जीप पर बरस पड़ी गोलियां—
बैंग
ज़िंग
ज़िंग
ज़िंग
उफ! गोलियों से टायर बर्स्ट हो गया!
जीप संभालो!

इधर उठ खड़ा हुआ अश्वबाज भी—
कौन लोग हैं उस जीप में? इस तरह के वाहन तो वाइल्ड लाइफ के दर्शन के लिए रखे जाते हैं।
ओह! वह छोकरा सुपर कमाण्डो ध्रुव, अश्वराज, अश्ववट और रक्ताम्बर के साथ चला आ रहा है। अब मुझे यहां से निकलने में देर नहीं करनी है।
... क्योंकि देरी, कुदुमछुम्बी को मुझसे दूर कर देगी। और कुदुमछुम्बी इस बार मुझे हर कीमत पर चाहिए।
जबड़े भींचकर गुर्रा उठा अश्वराज—
इन्हें हमारी मदद की फौरन जरूरत है, अश्वराज!
अश्ववट! रक्ताम्बर को उस विचित्र वाहन और शैतान अश्वबाज पर नजरें रखने के लिए कहो, मुझे दोनों का पता चाहिए।
सुपर कमांडो ध्रुव!
HELP! HELP!
और तब अश्वराज परिवर्तित हो गया अपने इच्छाधारी रूप में—
घबराओ नहीं! मैं जीप को सीधा कर रहा हूं।
एक और विलक्षण दृश्य। एक और विलक्षण मानव जो इच्छाधारी है।
तब तक दूसरी पुलिस जीपें भी वहां आ पहुंची थीं और तब—
रक्ताम्बर! बता कहां है वो शैतान अश्वबाज? और कहां है वो वाहन, जिसमें कुछ बदमाश लोग विस्फोटकों का प्रयोग करके मेरी कुदुमछुम्बी को ले गए हैं।
लेकिन शीघ्र ही फिर अपने सामान्य रूप में परिवर्तित हो गया वह।

अश्वराज! रक्ताम्बर कह रहा है कि शैतान अश्वबाज उसी वाहन का पीछा कर रहा है और वह वाहन उत्तर की ओर मौजूद किसी वन में प्रवेश कर रहा है।
यानी राजनगर वाइल्ड लाइफ सेंक्चुरी में।
ठहरो! अश्वराज! इतना तो मैं समझ चुका हूं कि तुम इस काल के नहीं हो। रक्ताम्बर उन शैतानों पर नजर रखेगा और तब तक तुम मुझे संक्षिप्त शब्दों में अपने, कुदुमछुम्बी के, इन आश्चर्य-जनक घोड़ों और शैतान अश्वबाज इत्यादि के विषय में बताओ।
क्योंकि किसी भी समस्या की तह तक पहुंचे बिना उसका हल सम्भव नहीं।
मुझे यानी सुपर कमांडो ध्रुव को इस समस्या की तह तक पहुंचना है। और वह भी जल्दी।
तब अश्वराज ने उसे बताना आरम्भ किया-
अश्वलोक का विलक्षण और इच्छाधारी अश्वसम्राट अश्वराज कहते हैं मुझे -

पृथ्वी पर हुई एक शानदार रथ मैराथन को जीतने के बाद मेरी अर्धांगिनी बनी राजा चिन्तितसिंह की पुत्री राजकुमारी कुकुमछुम्बी-
फिर अश्वमेध यज्ञ के अश्व कल्पतरू को सम्पूर्ण अश्वलोक की परिक्रमा करवा कर मैं बना चक्रवर्ती भी-
इसी बीच मानवता व अश्वता के कई दुश्मन पैदा हुए और मेरे हाथों मारे गए।
तब आया शैतान अश्वबाज! जिसका सिर अमृत पी लेने के कारण अमर है। शैतान की योजना कारू का खजाना लूटकर भविष्य में चले जाने की थी-
...जिसके लिए उसके पास थी एक चमत्कारी व तिलिस्मी आंख।
जिसकी मदद से उसने अनोखे द्वार का निर्माण कर लिया था जहां से होकर वह पहुंच सकता था भविष्य में।
लेकिन इससे पहले कि वह अपनी उस चेष्टा में सफल हो जाता-

... ठीक समय पर वहां आ पहुंचा मैं -
शैतान अश्वबाज का उद्देश्य पूरा न हो सका और मैंने उसे कुएं में कैद कर दिया
लेकिन अश्वबाज द्वारा सम्मोहित कर दिए गए अपने पांच घोड़ों को, कुंदन व खजाने सहित तिलिस्मी घेरे में जाने से भी मैं न रोक सका-
और यह मेरी पराजय थी। मेरी आत्मा उस रथ के साथ ही खिंच गई थी जैसे।
और इधर गायब होने के लिए छोटा हो रहा था वह घेरा। तब आखिरी क्षणों में मैं भी किसी अंजाम की परवाह किए बिना समा गया उस घेरे में—
भविष्य में मैं आ पहुंचा कलयुग। जहां घोड़े के व्यापारी अब्दुल्ला के बताए सूत्रों के जरिए मैंने खोज निकाला अपने पंचाश्व मित्रों को —
रक्ताम्बर की खोज के दौरान ही मेरी टक्कर हुई अश्वबाज से, जिससे मुझे उसके भी कलयुग में आ पहुंचने की जानकारी हुई —
धधकने लगा था अब अश्वराज का चेहरा।
सुपर कमांडो ध्रुव! शैतान अश्वबाज को उसके किए का दण्ड देने का वक्त आ गया है।
हिनन ऽऽ रक्ताम्बर और अश्ववट भी तुम्हारे साथ हैं अश्वराज!

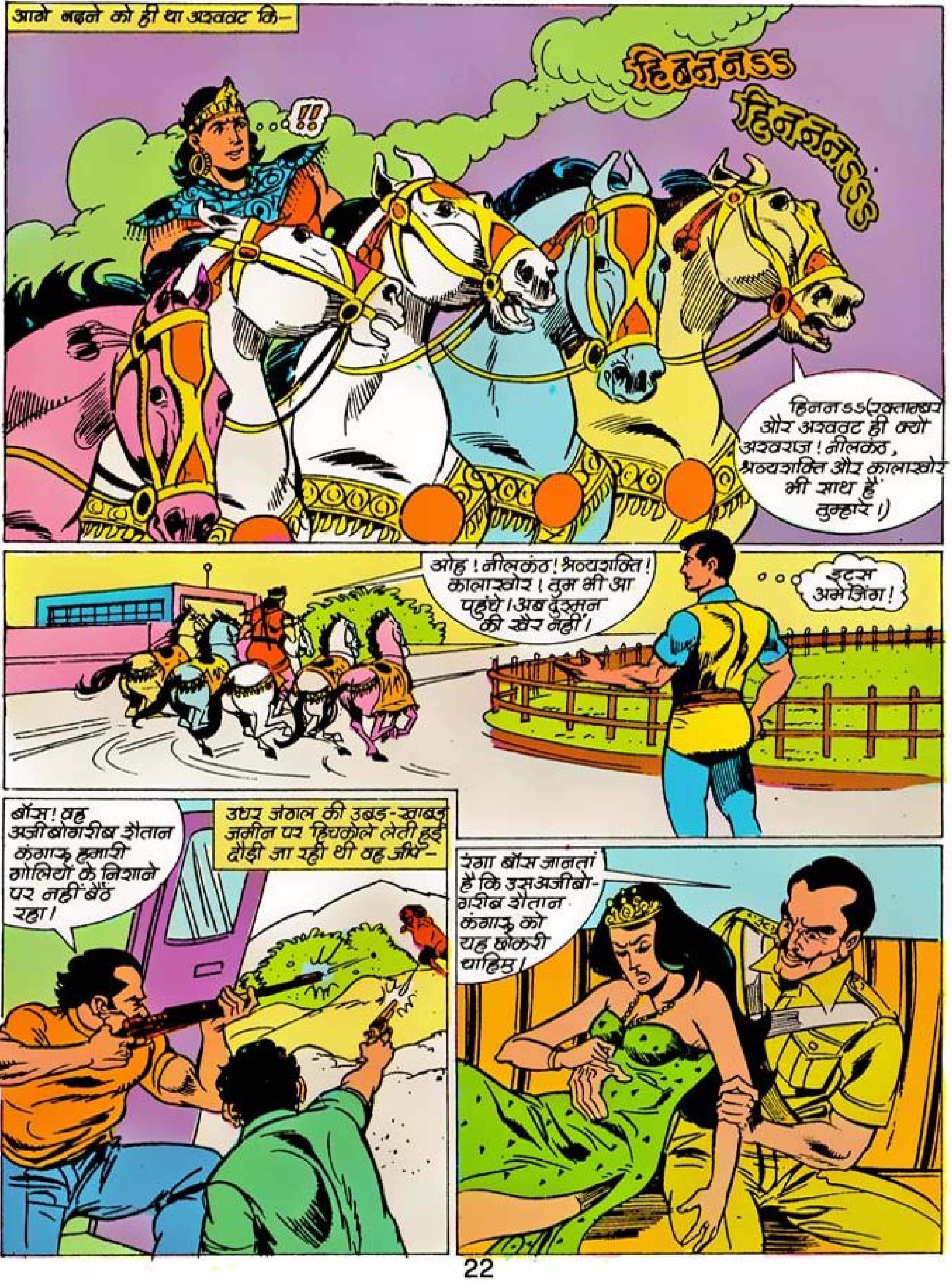
आगे बढ़ने को ही था अश्वराट कि–
हिनन न ऽऽ
हिननन ऽऽ
...!!
हिनन ऽऽ(रक्ताम्बर और अश्वराट ही क्यों अश्वराज! नीलकंठ, श्रव्यशक्ति और कालाखोर भी साथ हैं तुम्हारे!)
ओह! नीलकंठ! श्रव्यशक्ति! कालाखोर! तुम भी आ पहुंचे! अब दुश्मन की खैर नहीं!
इटस अमेज़िंग!
बॉस! वह अजीबोगरीब शैतान कंगारू हमारी गोलियों के निशाने पर नहीं बैठ रहा!
उधर जंगल की उबड़-खाबड़ जमीन पर हिचकोले लेती हुई दौड़ी जा रही थी वह जीप–
रंगा बॉस जानता है कि उस अजीबो-गरीब शैतान कंगारू को यह छोकरी चाहिए!

और हमें चाहिए कारूं का वह खज़ाना जिसके बारे में मुझे मेरे भाई पुलिस इंस्पेक्टर गिरीश ने बताया था। गिरीश को यह बात बताई थी खुद इसके स्वामी अश्वराज ने। हा हा हा।
अश्वराज! कहां है मेरा अश्वराज शैतान?
इंस्पेक्टर गिरीश के विषय में जानने के लिए पढ़ें 'अश्वराज और अश्ववट'।
कुदुमकुम्बी, उसके पूरे हुलिये और कारूं के खज़ाने की बातें सुनने के बाद से ही मुझे वाइल्ड लाइफ सैंक्चुरी में फारेस्ट ऑफीसर की यह नौकरी खलने लगी थी।
और मैं तलाश करने लगा था इस छोकरी की। हा हा हा।
और जैसे ही मुझे एक मैगज़ीन में छपे फोटो और इसके पारुल के नाम से मिस इंडिया कांटेस्ट-95 में हिस्सा लेने की बात पता चली मैं दौड़ा चला आया। यहां आने के बाद मैंने पाया कि पारुल ही कुदुमकुम्बी है। मुझे मिली इस कामयाबी को मैं इतनी आसानी से नहीं खोने दूंगा।
बता कहां है कारूं का खज़ाना जिसका पता केवल तू ही जानती है।
ओह!
आह! मुझे मेरे अश्वराज के पास पहुंचा दो। मैं तुम्हें कारूं के खज़ाने का पता बता दूंगी।
एक धमाके के साथ उस इमारत के बाहर पहुंचकर रुकी वह जीप—
बॉस! अचानक कंगारू गायब हो गया है।
गोली मारो कंगारू को। कारूं की सोचो। खज़ाने की चाबी मेरे पास है बेवकूफो!

और तुम सबकी मौत की चाबी मेरे पास है!
आईऽऽ
आह
रंगा बॉस के हाथ में चमकी पिस्तौल लेकिन–
छोड़ दे मुझे शैतान!
उफ! शैतान लड़की!
कुकुमकुम्बी का पीछा न कर सका रंगा बॉस! क्योंकि इसी पल अश्वबाज के हथौड़े जैसे शक्तिशाली हाथ के वार ने तोड़ डाली थी उसकी खोपड़ी–
आह!
मेरा अश्वराज भी इसी युग में आ पहुंचा है कहां है वह?
उफ! आह!
थाम ली शैतान अश्वबाज ने उसकी मोम सी कलाई!
कारूं का खजाना तो मैं हासिल करूंगा ही, लेकिन उससे भी पहले मुझे हासिल करनी है अश्वराज की जिन्दगी। जिसका कि पूरा इंतजाम कर चुका हूं मैं।
नहीं! छोड़ दे मुझे शैतान!

इधर आगे बढ़ते पंचाश्व अश्वराज के आदेश पर रुक गए–
इन्हें जरूर शैतान अश्वबाज ने ही मारा है।
अश्वराज ! जो ठीक वहीं पहुंचकर उतरा था अश्ववट की पीठ से—
अश्वराज ! रक्ताम्बर कह रहा है कि यह तो वही ताज है जो भामीश्री के मस्तक पर सुशोभित किया जा रहा था।
ओह !
पुनः आगे बढ़ा अश्वराज तो !
अश्वराज! यह कड़ा भी भामीश्री ने ही पहन रखा था।
अश्वराज ! नीलकंठ कह रहा है कि अब देर न करो और उस शैतान का संहार करो ताकि उसके बाद हम वापस अश्वलोक जा सकें।
शीघ्र ही–
अश्वराज ! रक्ताम्बर के अनुसार इसी छिद्र से होकर जाता है अश्वबाज तक पहुंचने का रास्ता।
तुम मेरी यहीं प्रतीक्षा करना। मेरे पंचाश्व मित्रो! मैं अतिशीघ्र कुदुम को साथ लेकर लौटूंगा।
आंखों को अंधा कर देने वाले घनघोर अंधकार को चीरता हुआ नीचे जाने लगा अश्वराज।
मुझे अश्वबाज के किसी भी हमले की आशंका से सावधान रहना होगा।

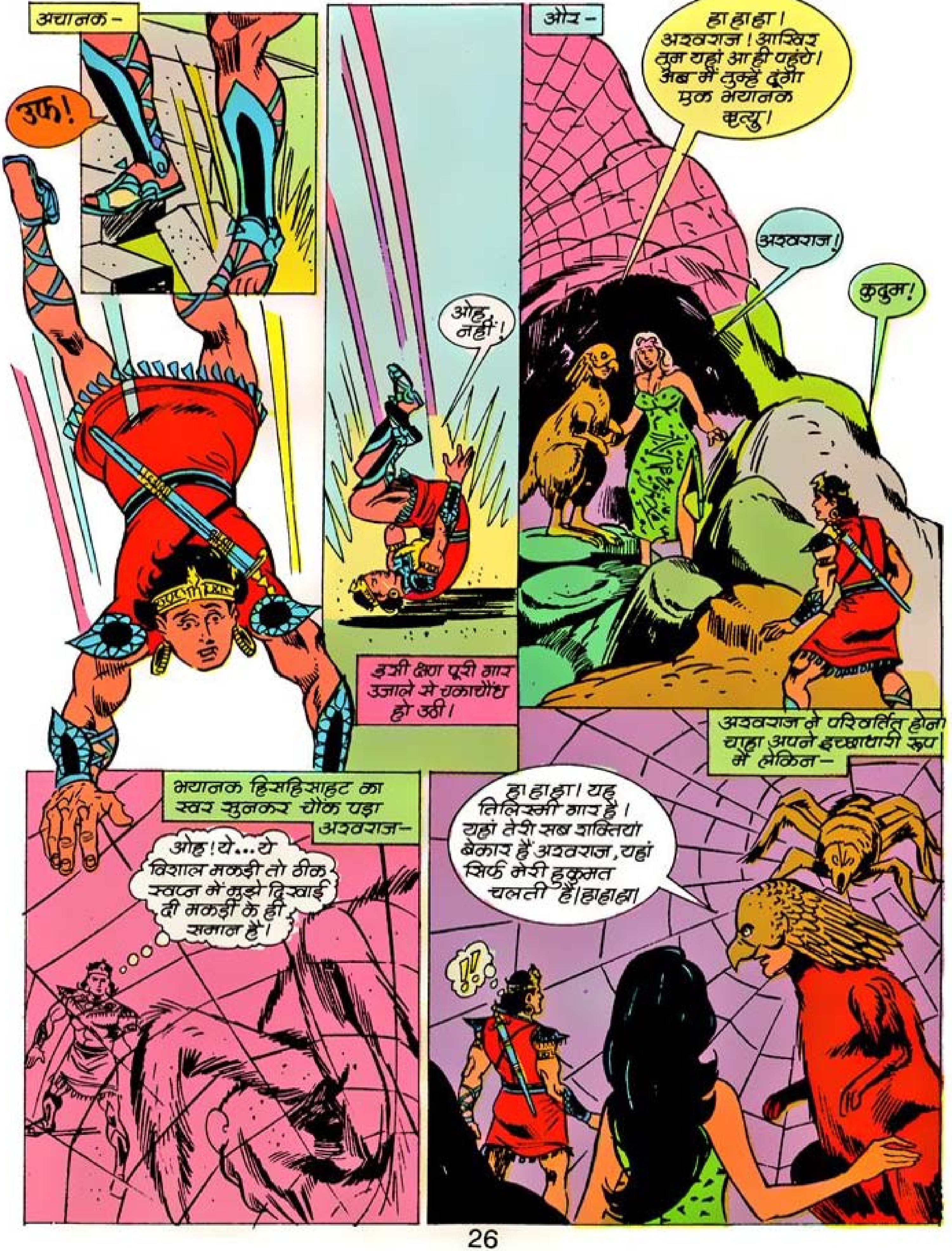

अचानक –
उफ़!
ओह, नहीं!
इसी क्षण पूरी गार उजाले से एकाचौंध हो उठी।
और –
हा हा हा! अश्वराज! आखिर तुम यहां आ ही पहुंचे। अब मैं तुम्हें दूंगी एक भयानक मृत्यु।
अश्वराज!
कुबुम!
भयानक हिसहिसाहट का स्वर सुनकर चौंक पड़ा अश्वराज –
ओह! ये...ये विशाल मकड़ी तो ठीक स्वप्न में मुझे दिखाई दी मकड़ी के ही समान है।
अश्वराज ने परिवर्तित होना चाहा अपने इच्छाधारी रूप में लेकिन –
हा हा हा! यह तिलिस्मी गार है। यहां तेरी सब शक्तियां बेकार हैं अश्वराज, यहां सिर्फ मेरी हुकूमत चलती है! हा हा हा!
!!

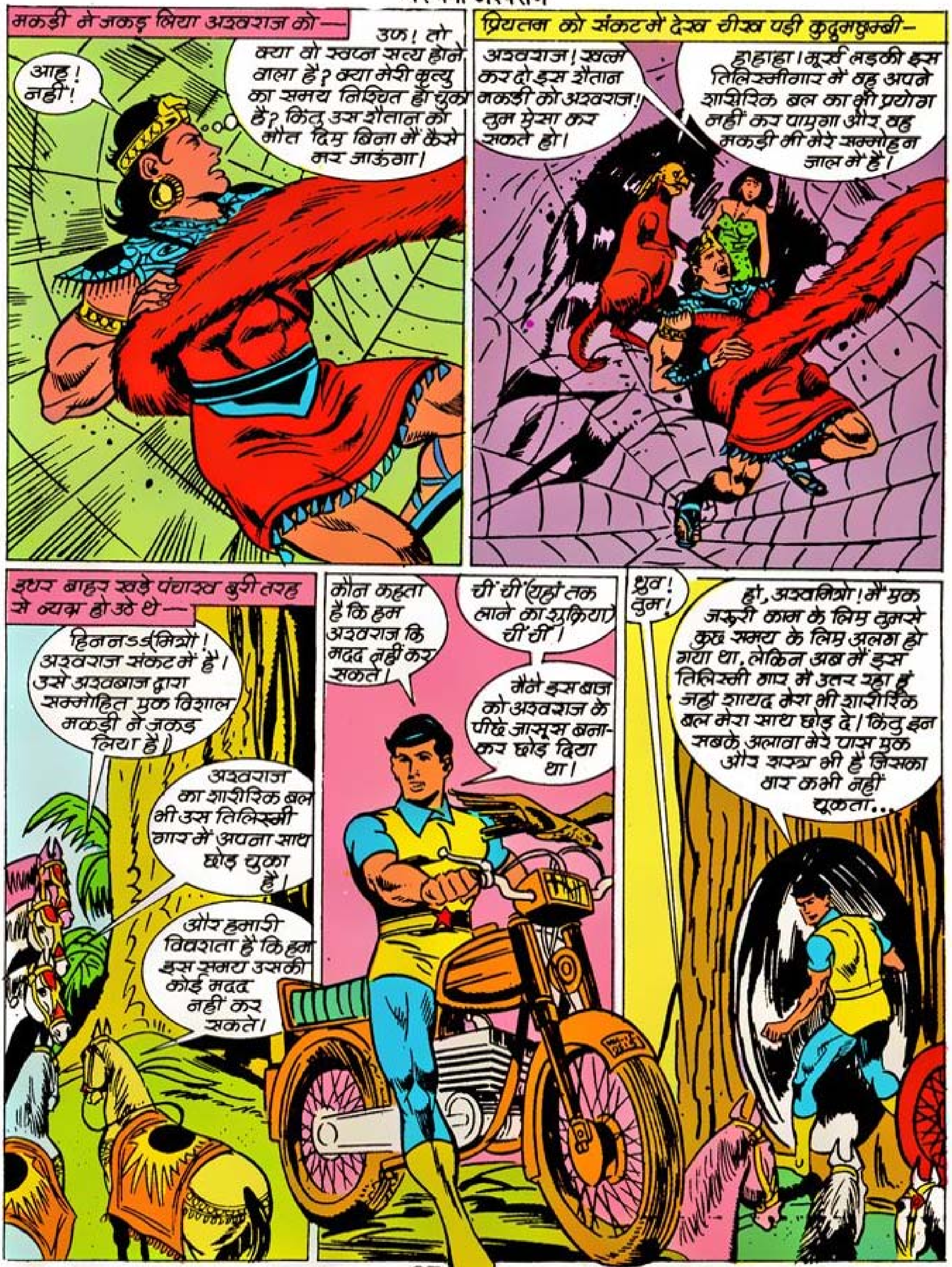
मकड़ी ने जकड़ लिया अश्वराज को—
आह! नहीं!
उफ! तो क्या वो स्वप्न सत्य होने वाला है? क्या मेरी मृत्यु का समय निश्चित हो चुका है? किंतु उस शैतान को मौत दिए बिना मैं कैसे मर जाऊंगा।
प्रियतम को संकट में देख चीख पड़ी कुदुमछुम्बी–
अश्वराज! खत्म कर दो इस शैतान मकड़ी को अश्वराज! तुम ऐसा कर सकते हो।
हाहाहा। मूर्ख लड़की इस तिलिस्मीगार में वह अपने शारीरिक बल का भी प्रयोग नहीं कर पाएगा और वह मकड़ी भी मेरे सम्मोहन जाल में है।
इधर बाहर खड़े पंचाश्व बुरी तरह से व्यग्र हो उठे थे—
हिनन्ऽऽ (मित्रो! अश्वराज संकट में है। उसे अश्वबाज द्वारा सम्मोहित एक विशाल मकड़ी ने जकड़ लिया है।)
अश्वराज का शारीरिक बल भी उस तिलिस्मी गार में अपना साथ छोड़ चुका है।
और हमारी विवशता है कि हम इस समय उसकी कोई मदद नहीं कर सकते।
कौन कहता है कि हम अश्वराज कि मदद नहीं कर सकते।
चीं चीं (यहां तक लाने का शुक्रिया) चीं चीं।
मैंने इस बाज को अश्वराज के पीछे जासूस बनाकर छोड़ दिया था।
ध्रुव! तुम!
हां, अश्वमित्रो! मैं एक जरूरी काम के लिए तुमसे कुछ समय के लिए अलग हो गया था, लेकिन अब मैं इस तिलिस्मी गार में उतर रहा हूं जहां शायद मेरा भी शारीरिक बल मेरा साथ छोड़ दे। किंतु इन सबके अलावा मेरे पास एक और शस्त्र भी है जिसका वार कभी नहीं चूकता...

...और वह शस्त्र है बुद्धि।
ओह! गार की सभी दीवारों पर उस भयानक मकड़ी ने चिपचिपे जाले बुन रखे हैं।
कड़ाक
लेकिन मकड़ी की ये विशेषता होती है कि वह जाल बुनते वक्त यह ध्यान रखती है कि वह खुद भी अपने जाल में न फंस जाए।
ध्रुव ने सीढ़ी के डण्डे को जाल के पहले तार से छुआया-
और इसके लिए वो जाल की एक तार को चिपचिपे पदार्थ से व दूसरी को न चिपकने वाले पदार्थ से बुनती है।
अब मुझे पता चल चुका है कि वे न चिपकने वाली तारें कौन सी हैं।
ध्रुव सावधानी से आगे बढ़ा-
शैतान अश्वबाज का पूरा ध्यान अश्वराज पर ही लगा है।
और यही अवसर उस तक पहुंचने के लिए सर्वाधिक उचित है।
हा हा हा। तुझे तड़पा-तड़पाकर मारने की इच्छा पूरी हो रही है अश्वराज! हा हा हा।
मुझे छोड़ दे शैतान कमीने! छोड़ दे मुझे।
इसने अपना विष मेरे शरीर में प्रवेश करा दिया है।
इधर अपने ठहाकों से गार को गूंजा रहे अश्व-बाज की हंसी में सहसा ही ब्रेक लग गए-
बहुत हंस लिया तू अश्वबाज! अब बारी है तेरे रोने की।
धड़
तुम!

ध्रुव के एक ही भरपूर झटके के साथ अश्वबाज मकड़ी के पास आ गिरा!
सुपर कमांडो ध्रुव! अब तू भी अश्वराज के साथ ही मरेगा।
तुम कौन हो?
घबराओ नहीं कुदुम! मेरा नाम सुपर कमांडो ध्रुव है। अब यह शैतान मेरे हाथों से नहीं बचेगा।
अश्वराज को छोड़कर अश्वबाज पर झपट पड़ी मकड़ी–
ओह नहीं! म... मेरी आंख कहां गई? उफ! इस मकड़ी को मैंने पहले से ही सम्मोहित कर रखा है। और ये अपने सामने पड़ने वाले प्रत्येक प्राणी को काट कर उसमें अपना विष घोल देती है।
हिस्स्स
और अगर मेरा कंगारू वाला जिस्म इसके विष से नष्ट हो गया तो तिलिस्मी आंख की गैर मौजूदगी में मैं यहां इस गार से भी नहीं निकल पाऊंगा। क्योंकि इस गार की सभी शक्तियां मेरी आंख की गुलाम हैं और यहां मेरा सिर उड़ भी नहीं पायेगा।
इसने अपना विष मेरे कंगारू जिस्म में घोल दिया है।
अश्वबाज! तुम्हारी ताकत ये आंख मेरे कब्जे में है! ये घोड़े की उसी बाल में फंसी रह गई थी और अश्वराज से कहानी सुनने के बाद ही मुझे इसे तलाश करने की जरूरत पड़ी थी।
अगर ये तुम्हें चाहिए तो फौरन इस मकड़ी को नष्ट करने का उपाय बताओ।
ये आंख ही उसे नष्ट कर सकती है। इसे मेरी ओर फेंक दो।
ध्रुव ने आंख नीचे फेंक दी।

अश्वबाज ने तुरन्त तिलिस्मी आंख की मदद से खत्म किया मकड़ी को–
अब इसी के साथ मुझे अपना जिस्म त्याग-कर यहां से फरार होना है वापस अश्वलोक को।
किन्तु मकड़ी की कैद से स्वतन्त्र होते ही उछल कर रह गया अश्वबाज का सिर और वह आंख–
ओह! नहीं!
अश्वबाज ने फरार होने के लिए बनाया तिलिस्मी घेरा–
अश्वराज ने सिर पर जबरदस्त वार किया–
ओह! तू अभी जिन्दा है?
तेरा अंत किए बिना नहीं मरूंगा अश्वबाज!
किन्तु उसी तेजी से पलटकर आया सिर
मौत तो अब तेरी निश्चित है अश्वराज!
अश्वबाज झपटा अपनी आंख पर।
लेकिन इसी पल पड़ी ध्रुव की शक्तिशाली ठोकर से उछल तिलिस्मी घेरे में समा गया अश्वबाज का सिर–
ये शैतान सिर अमर है जो यहां रहा तो कभी भी फिर मुसीबत बनकर मानवता पर मंडराएगा। इसका अश्वलोक वापस चले जाना ही ठीक होगा।
अश्वराज की ओर पलटा ध्रुव–
तुम्हें फौरन इलाज की जरूरत है अश्वराज! तुम...
नहीं। मेरा अंत आ गया है ध्रुव! मैं अपनी जन्म-भूमि पर दम तोड़ूं। म.. मेरी आखिरी इच्छा पूरी होने दो ध्रुव!
नहीं अश्वराज! तुम्हें कुछ नहीं होगा। मैं मौत से खींच लाऊंगी तुम्हें अश्वराज।

ज... जल्दी करो कुदम! देखो! तिलिस्मी घेरा सिकुड़ना शुरू हो गया है।
??
हां, हां! अश्वराज! हम वापस जाएंगे।
और तभी धड़धड़ा कर गिरा गार की छत का वह हिस्सा। साथ ही गिरे पंचाश्व—
हमारी कोशिश सफल हुई और हमारे खुरों की चोट से ध्वस्त हो गया गार!
ध्रुव मित्र! तुमने मेरी जो मदद की है उसे मैं अपने आखिरी क्षणों तक भी नहीं भूल पाऊंगा। पंचाश्व! मित्रो! जल्दी करो। अलविदा मित्र ध्रुव!
इनके प्रवेश के साथ ही मैं इस तिलिस्मी आंख को तुरन्त नष्ट कर दूंगा।
अलविदा अश्वराज!
अश्वराज और कुदुमफुल्की के बाद एक-एक करके पंचाश्व भी समा गए उस तिलिस्मी घेरे में—
हिनन
और तब ध्रुव ने जमीन पर पटक मारी वह तिलिस्मी आंख—
तड़के
आंख के टुकड़ों के साथ गायब हो गया वह तिलिस्मी घेरा भी।
भरे हृदय से आगे बढ़ चला ध्रुव भी—
दुःख केवल इस बात का रहा कि मैं अश्वराज को मौत के मुंह में जाने से न बचा सका।

(समाप्त)